दिल की पेदाइश का मकसद

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे
भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

दिल की पेदाइश का मकसद

दिल तो अल्लाह ने इसलिये दिया हे कि इसमे उसकी मोहब्बत के बीज डाला जाये, दाना डालने के बाद जमीन को पानी देना ज़रूरी हे, अगर उसको पानी ना दिया जाये तो दाना जल कर खतम हो जायेगा इसलिये एग्रीकल्चर डीपार्टमेन्ट के लोगो का कहना हे कि दाना डालने के बाद जो पानी उपर से फितरी और नेचरल अंदाज से डाला जाता हे वो ज्यादा फायदा देता हे,

इसी लिये आजकल कुछ मुल्को मे हूकुमती पैमाने पर भी पानी का छीडकाव उपर से किया जता हे, जो बहुत फायदे कारक साबित हुवा हे.

इन्सानो भी कुदरत का एक निजाम हे, दिल नीचे रखा और आखे उपर, ताकी आप दिल की जमीन मे अल्लाह के इश्क और मोहब्बत का बीज डाले, और उपर से आखो के जरिये आसुओ का पानी बरसाये, ताकी दिल की जमीन मे जो अल्लाह के इश्क और मोहब्बत का बीज हे, वो परवान चढना शुरू हो, और उस्के असरात जाहिर हो.

दिल की कीमत

अल्लाह कुरान मे इरशाद फरमाते हे, कि मेने इन्सान के नफस को और माल को जन्नत के बदले मे खरीद लिया हे, अब नफस की कीमत तो जन्नत लगा दी, लेकिन दिल की कीमत अल्लाह ने अपना दीदार रखा हे, इसलिये जो इन्सान अपना दिल अपने रब के हवाले कर देगा अल्लाह कियामत के दिन उसको अपना दीदार अता फरमायेगे. (सुरे कीयामह २२/२३).

हदीस मे आया हे कि कियामत के दिन कुछ लोग खडे होगे अल्लाह की तरफ देखेगे और देख कर मुश्कुरायेंगे, तो अल्लाह उनकी तरफ देख कर मुश्कुरायेंगे, ये केसे खुशनसीब लोग होगे जो कियामत के दिन अच्छे हाल के अंदर खडे होगे, अल्लाह ने जन्नत को बनाया तो उसकी चावी रिजवान (जन्नत के निगरान फरिश्ते) को दे दी, जहन्नम

को बनाया तो उसकी चावी मालिक (जहन्नम के निगरान फरिश्ते) को दे दी, अल्लाह ने बैतुल्लाह को अपना घर बनाया और उसकी चावी बनु शैबा के हवाले फरमादी, कि उनके पास रहेगी, किसी और के पास नही जा सकती, इसी तरह अल्लाह ने इन्सान का दिल बनाया मगर उसकी चावी अपने कब्जे कुदरत मे रखी, वो ही दिलो को फेरने वाले हे वो जिसे चाहते हे उलट फेर देते हे.

गोया हमारे दिल का ताला अगर खुल सकता हे तो अल्लाह की रहमत के साथ खुल सकता हे, इसलिये हमे चाहिये कि अल्लाह के सामने दुवाए मांगा करे, और फरियाद किया करे, कि ऐ करीम रब जब हमारे दिलो का मामला आप की दो उगलियो के दरमियान हे तो आप दिल के ताले खोल दीजये, ताकी हम भी आप की मुहब्बत भरी ज़िन्दगी को इख्तियार कर सकेगे.

दिल की बेदारी अल्लाह के ज़िकर मे हे, जो शख्स अल्लाह के ज़िकर मे मशगुल रहता हे उसका दिल बेदार होता हे, नबी करीमﷺ ने फरमाया अल्लाह का ज़िकर करने वाले और ना करने वाले की मिसाल जिन्दा और मुरदा की सी हे, अगर इन्सान अल्लाह के ज़िकर से गाफिल हे तो समझ लो कि इसके दिल पर

गफलत की निंद तारी हे. (मआलीमुल इरफान)

दिल के नूर की हिफाजत

आम लोगो और अल्लाह के नेक बन्दों मे बुनयादी फर्क गुनाहो से बचने का हे, हम आम लोग कभी कभी तो ऐसी नेकीया कर लेते हे जेसे बडे बडे अल्लाह वाले करते हे, खुब अल्लाह के ध्यान वाली नमाज पढते हे, और दिल मे नूर आ जाता हे, मगर जब मस्जीद से बाहर निकलते हे तो घर पहुच ने से पहले जो नूर आया था सब खतम हो जाता हे, जेसे कच्चा मटका होता हे उसमे पानी डाल दे, तो कुछ ही देर के बाद वो खाली हो जाता हे, क्युकी उसमे से कतरा कतरा करके पानी टपकता रहता हे, तो कुछ घंटे के बाद वो खाली हो जाता हे,

इसी तरह हमारा हाल ये होता हे कि मस्जीद मे बेठ कर इबादत की तो दिल नूर से भर गया, लेकिन जेसे ही मस्जीद से बाहर गये और लोगो से मिले तो दुसरो की गीबत करने की वजह से और बदनजरी की वजह से वो नूर टपकना शुरू कर देता हे, इस तरह हम उस नूर को जाए कर देते हे, उसकी हिफाजत नही करते.

हम लोग उस बरतन की तरह हे जिसमे सुराख था,

इसलिये जितना भी नुर उसमे आता हे वो जाए होता रहता हे और अल्लाह के नेक बन्दों की मिसाल उस बालटी की सी हे जिसके अंदर कतरा कतरा नुर आये और वो उस नुर को महफूज कर लेते हे, जिसकी वजह से उनके दिल की बालटी नुर से भरी रहती हे.

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.